[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3656

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला मे रंगों का सौन्दर्य

के. राजलक्ष्मी
शोधार्थी
चित्रकला विभाग – दृश्यकला संकाय, इं.क.सं.वि.वि.खैरागढ़

नीला आकाश, चारों तरफ फैली हरियाली रंग–बिरंगे फूल एवं सुंदर–सुंदर पशु–पक्षी। ईश्वर की अद्भुत कृति एवं सुंदर रंग संयोजन। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो भगवान चित्रकार के रूप में इस संसार रूपी कैनवास पर अपने रंगों एवं रेखाओं के माध्यम से एक सुंदर चित्रण कर दिया हैं। अगर चित्रण में यदि रंगों का समावेश न हो तो क्या तब भी तब भी यह संसार इतना ही सुंदर दिखेगा? संभवतः नहीं। मनुष्य अपने नेत्रों के माध्यम से जो कुछ भी देखता उनमें रंगों का समावेश होता ही है, अतः यह कहना सर्वथा गलत नहीं होगा कि जीवन में रंगों का स्थान सर्वोपरि है और यही रंग हमें अपने सौन्दर्य व आकर्षण के माध्यम से रसास्वादन या आनंदानुभूति के शीर्ष तक ले जाते हैं, क्योंकि आनन्द भाव सम्पूर्ण सृष्टि का सार है और हृदयगत् भावनाओं की अन्तिम परिणति भी।

चित्रकला अर्थात् रंगों के माध्यम से प्रदर्शित होने वाली कला से है, क्योंकि रंग एवं प्रकाश ही हमारे दृष्टिज्ञान के सरलतम तत्व हैं। चित्रकला में रंग एवं रंगों के पारस्परिक संबंध से सौंदर्य की सृष्टि होती हैं। रंग दर्शक को, चाहे वह एक कलाकार हो या साधारण मानव, बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।रंग का मानवीय भावनाओं एवं विचारों से गहरा संबंध हैं। हम जैसा सोचते है वैसा ही व्यवहार भी करते हैं। उसी तरह हमारे विचार एवं जैसी हमारी भावनायें होंगी, हमारा आकर्षण भी इसी प्रकार रंगों पर केन्द्रीत होगा। यदि कलाकार बहुत प्रसन्न हैं तो वह चटख एवं चमकदार रंगों का प्रयोग करेगा और यदि वह दुखी हो तो उदासीन, मटमैले व धुंधले रंगों का व्यवहार करेगा। यह भाव मन के भीतर से आता हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि रंगो का मनुष्य के मन पर प्रभाव पड़ता है। हर रंग अपने में एक भाव समाहित किए हुए रहता हैं। जैसे – श्वेत रंग हमारे अंदर शांति, पवित्रता, शुद्धता एवं स्वच्छता जैसे विचार उत्पन्न करता हैं। उसी तरह लाल रंग उत्तेजना, क्रोध व वीरता जैसे भाव उत्पन्न करता हैं। नीला रंग सुखद अनुभूति देता है तो हरा रंग हृदय को शीतलता प्रदान करता है। इसी तरह रसों के लिए भी रंगों का निर्देश हुआ हैं। जैसे – श्रृंगार के लिए श्यामवर्ण, हास्य के लिए श्वेत, करूण रस के लिए काला, रौद्र रस के लिए लाल, वीर रस के लिए गौर वर्ण, भयानक रस के लिए काला एवं वीभत्स रस के लिए नीला, अद्भुत रस के लिए पीला तथा शान्त रस के लिए श्वेत रंग माना गया हैं।

रंगों से मानव सदा ही आकर्षित रहा है। किसी भी कलाकृति को प्रदर्शित करने में रंग मुख्य आधार हैं। कला के क्षेत्र में आदि–अनादि काल से लेकर आज पर्यन्त विभिन्न परिवर्तन व प्रयोग हुए हैं तथा अनवरत जारी हैं। भित्ति चित्रण हो या लोककला, बालकला, आदिमकला या आधुनिक कालीन चित्रकला की नवीन शैलियाँ, सभी तरह की चित्रण शैलियों में रंगों का अपना विशेष स्थान व प्रभाव रहा है। प्रागैतिहासिक चित्रों में रंगों का प्रयोग बाल सुलभ प्रकृति के रूप में किया गया है, तो अजंता के भित्तिचित्रों मे प्रयुक्त रंगविधान शिल्प कुशलता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। पटचित्रों, मधुबनी, पहाड़ी कलम या फिर राजस्थानी कला शैलियाँ आदि में देखा जाय तो चमकीले, चटख एवं सपाट रंग सबका मन मोह लेते हैं। आधुनिक काल की कला शैलियों पर दृष्टि डालें तो चित्रकला का स्वरूप ही बदल जाता है। जब कैमरे का अविष्कार हुआ तो इसने कला जगत में उथल–पुथल मचा दी। इससे कला जगत मे नई क्रांति आयी और नये–नये प्रयोग होने के साथ–साथ सौन्दर्य एवं रसानुभूति का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। ये सारे प्रयोग रंगों के माध्यम से सौन्दर्य के धरातल पर नवीन प्रयोगों के साथ आनंद के चरम तक पहुँचने एक नया माध्यम सिद्ध हो चुका है।

अभिव्यंजनावाद के आते–आते कला अमूर्त हो गयी। रूपाकार कहीं खो गये और उनका स्थान भी रंगों ने ले लिया। रंगों के माध्यम से गहन अभिव्यक्तियों को व्यक्त किया जाने लगा। रंगों के नये अनूठे मानदण्ड स्थापित होने लगे। अमूर्त चित्रण के माध्यम से कलाकारों ने यह बताने की कोशिश की कि जब कलाकार की कल्पना अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाती है तब रूपाकार कहीं खो जाते हैं और उनका स्थान रंग ले लेते हैं। इस तरह रंगों द्वारा एक सुंदर कृति की रचना होती है।दूसरे शब्दों में यदि कहा जाये कि अब मनुष्य अपने जीवन एवं कैनवास पर वैयक्ति भावों को पहले से कहीं अधिक स्थान देने लगा है। क्योंकि रंग प्रधान चित्र ही चित्रकार की मनोदशा का वर्णन करते नज़र आते हैं। हर रंग कुछ कहता है और यही बात चित्रकार अपने कैनवास पर उकेरना चाहता है। वह कहीं–न–कहीं अपनी चित्रकारी के माध्यम से समाज से अपने मन की बात कहना चाहता है और रंग ही उसके मनोभावों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम बनते हैं, यह साकार एवं मूर्त रूप से ऊपर उठकर भावों पर आश्रित है और ये भाव रंगों के माध्यम से ही सौन्दर्य पर स्थापित होते हैं, क्योंकि सौन्दर्य ही भावों को जन्म

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

देती है और भावानुरूप ही रसोत्पत्ति होती है। सौन्दर्य का तात्पर्य किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के प्रति हमारे मन में उत्पन्न हो रहे आकर्षण अथवा विकर्षण से है। यह आकर्षण या विकर्षण ही भावों को जन्म देता है तथा यही भाव रसोत्पत्ति के मूल कारक सिद्ध होते हैं।

अब जहाँ तक बात चित्रकला और रंगों की है तो यह बात सीधे तौर कहना ही सही होगा कि चित्रकला में रंग व चित्र परस्पर एक–दूसरे से सम्बद्ध होते हैं। आकार एवं रंग, प्रकृति के अनंत रूपों में बहुत ही महत्वपूर्ण है। यदि आकार में रूपात्मकता है तो रंग में आकर्षण होगा ही। जब एक चित्रकार एक सुंदर चित्र की परिकल्पना करता है तो रूपाकारों के साथ–ही–साथ रंगों का भी विचार भी उसके मन में आता ही है। विभिन्न रंगों के प्रयोग द्वारा चित्रकार चित्र में सौन्दर्य की सृष्टि करता है। चित्रकला में चित्रकार की भावाभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने का माध्यम तूलिका एवं रंग ही होते हैं, जिनके द्वारा वह अपने मनोभावों की व्यंजना करता हैं। कला में आध्यात्म है, कला में रस है, कला में सौन्दर्य है। रंगों के माध्यम से साकार प्रकृति को हम निराकार रूप में रंग सकते हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म चित्रण प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है साथ ही साथ यह भी कहा जा सकता है कि रंगों के माध्यम से हम अपने चित्रों मे मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. कला समीक्षा, गिर्राज किशोर अशोक
2. भारतीय चित्रकला का इतिहास, अविनाश बहादुर वर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
3. कलादीर्घा, दृश्यकला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2013,अंक 26
4. कथक अक्षरों की आरसी, ज्योति बख्शी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,